पंजीयन संख्या : 68939/98 अंक - 18, वर्ष 24

ज्ञान तत्त्व

समाज शास्त्र

अर्थ शास्त्र

समाज शास्त्र

राजनीति शास्त्र

बजरंग मुनि

मार्गदर्शक सामाजिक शोध संसथान

ज्ञान यज्ञ परिवार

456

सत्यता और निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

सम्पादक : बजरंग लाल अग्रवाल रामानुजगंज (छ.ग.)

पोस्ट की तारीख : 30-09-2024

प्रकाशन की तारीख : 16-9-2024

पाक्षिक मूल्य - 10/- (दस रूपये मात्र)

अनुक्रमणिका

सामाजिक विषयों पर मुनि जी के लेख

१.बढ़ते बलात्कार का मूल कारण राजनैतिक अदूरदर्शिता :
२.साम्यवादियों की विशेष पहचान :
३.सामाजिक एकता के लिए जनजागरण ही मार्ग :
४.राजनैतिक लाभ हानि के परे सत्यासत्य का उद्घाटन :
५.राजनैतिक व्यवस्था है या लूटतंत्र :
६.लोकतंत्र को खोखला कर रहे ब्लैकमेलर :
७.गाँधी के ब्लैकमेल करके शुरू हुआ लोकतंत्र :
८.नेहरु ने सरकार नामक कम्पनी बनाया न कि तंत्र :
९.कम्युनिज्म और सम्प्रदायवाद में फंसा भारत :
१०.सामाजिक बुराईयों का राग अलापने वालों से बनानी होगी दूरी :
११.खतरे में सामाजिक शान्ति :

राजनैतिक विषयों पर मुनि जी के लेख

१२.न्यायिक सक्रियता की प्राथमिकताएँ क्या? :
१३.नेहरू परिवार की मुहब्बत की दुकान :
१४.संघ और भाजपा की समझौतावादी रणनीति :
१५.अपराधियों के राजनैतिक संरक्षण की राजनीति :
१६.INDI गठबंधन कितना 'INDIAN'? :
१७.भारतीय प्रधानमंत्री की वैश्विक भूमिका :
१८.राहुल वैचारिक रूप से साम्यवादी तानाशाही के पक्षधर :
१९.उग्रवाद और वर्ग-विद्वेष की राजनीति :

२०. ज़ूम पर होने वाले 'चर्चा' कार्यक्रम से :

१.बढ़ते बलात्कार का मूल कारण राजनैतिक अदूरदर्शिता :

यदि गंभीरता से चिंतन किया जाए तो भारत की राजनीतिक व्यवस्था ने समाज के सभी क्षेत्रों में गिरावट बढ़ाई है। समाज में दिखने वाली अधिकांश समस्याएं राजनीति से ही समाज में आई है। राजनीती में दिख रही बुराई समाज से राजनीति में नहीं गई है। स्वतंत्रता के पहले का भी सामाजिक वातावरण मैंने लंबे समय तक देखा है और वर्तमान वातावरण भी देख रहा हूं। स्वतंत्रता के पहले व्यभिचार करने पर किसी प्रकार की रोक नहीं थी, सेक्स को एक प्राकृतिक भूख माना जाता था। मुझे अच्छी तरह याद है कि बहुत से लोग बाहर से आकर हमारे क्षेत्र में धंधा करते थे और बहुत से लोग बाहर जाकर धंधा करते थे। जो बाहर के लोग आते थे वह सवर्ण, यहां की दलित महिलाओं के साथ गुप्त रूप से संबंध बनाते थे। संतान भी पैदा कर लेते थे, जो दलित मानी जाती थी। जो बाहर के पुरुष यहां आते थे उनकी महिलाएं अपने गांव में खेती करती थी, वह अपने दलित नौकरों से संबंध बनाती थी। उनके जो संतान पैदा होती थी, वह सवर्ण मानी जाती थी। सवर्ण दलित का भेद सिर्फ दिखावटी था, आंतरिक नहीं। लेकिन धीरे-धीरे जब से इन महिला पुरुषों के आंतरिक संबंधों में राजनीतिक हस्तक्षेप शुरू हुआ, तब से भारत में बलात्कार लगातार बढ़ते जा रहे हैं। प्रारंभिक काल में बलात्कार नगण्य होते थे, आज बलात्कारों की बाढ़ आई हुई है, क्योंकि बलात्कार शब्द को ब्लैकमेलिंग का हथियार बना लिया गया है। पुराने जमाने में 'महिलाएं सहमति के लिए ब्लैकमेल' करती थी और वर्तमान समय में 'महिलाएं ब्लैकमेल करने के लिए कानून का सहारा' लेती है। बलात्कार शब्द महिलाओं के लिए ब्लैकमेलिंग का एक बड़ा अपराध हथियार बन गया है। सच बात यह है कि बलात्कार बढ़ना राजनीतिक हस्तक्षेप का परिणाम है। यदि राजनीतिक हस्तक्षेप बंद हो जाए तो बलात्कार अपने आप कम हो जाएंगे। इस तरह मैं यह कह सकता हूं कि वर्तमान भारत में राजनीतिक व्यवस्थाओं ने सभी सामाजिक व्यवस्थाओं पर दुष्प्रभाव डाला है और दुर्भाग्य है कि राजनेता ही इन सब बुराइयों के लिए समाज को दोषी ठहरा रहे हैं।

यह बात सच है कि मेरी अधिकांश भविष्यवाणियां सच निकली है। जिस समय निर्भया कांड को लेकर कानून कड़े किए गए थे। उस समय मैंने यह लिखकर भविष्यवाणी की थी, कि बलात्कार भी तेजी से बढ़ेंगे और बलात्कार में हत्याएं भी बहुत बढ़ेगी। मेरी बात बिल्कुल सच निकली है। बलात्कार भी बढ़ रहे हैं और हत्याएं भी बहुत बढ़ रही हैं। अब कुछ और नए कानून बना रहे हैं। यह कानून जब लागू हो जाएंगे, तो देश में बलात्कारों की भी बाढ़ आ जाएगी और हत्याएं भी बहुत तेजी से होगी। क्योंकि बलात्कार के लिए जो कानून बना रहे हैं, यह कानून बलात्कार और हत्याओं को बढ़ाने को प्रोत्साहित करते हैं। सच्चाई यह है कि भारत में वास्तविक बलात्कार करने वालों की संख्या एक प्रतिशत से अधिक नहीं है, लेकिन आप प्राकृतिक भूख को कानून से रोकने की असफल कोशिश कर रहे हैं। इस असफल कोशिश के कारण ही भारत में बलात्कार भी बढ़ रहे हैं, और बलात्कारों को रोकने के कानून के कारण 'हत्या' जैसे अपराध भी बढ़ा रहे हैं। भविष्य में यह निश्चित दिखता है कि फांसी पर चढ़ने वालों की संख्या भी बहुत तेजी से बढ़ जाएगी। हो सकता है कि आप आबादी घटाने का यह सबसे अच्छा तरीका समझ रहे हो, लेकिन मेरी समझ में यह तरीका गलत है। अब भी समय है कि हम बलात्कार की परिभाषा को सुधार ले। मैं यह बात फिर से पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं कि जब तक महिलाओं के संबंध में नीतियां नहीं बदली जाएगी, तब तक बलात्कार नहीं रुकेंगे बलात्कार बढ़ते ही जाएंगे, चाहे आप कितने भी लोगों को गोली मारते रहें। मैं आज तक नहीं समझा कि जो महिलाएं अपने शरीर की सौदेबाजी करती हैं और बाद में बलात्कार के आरोप लगाती हैं, इन भ्रष्ट महिलाओं की इतनी चिंता क्यों की जा रही है? बलात्कार की परिभाषा ठीक कीजिए, व्यभिचार और बलात्कार को अलग-अलग कर दीजिए, विवाह की उम्र घटा दीजिए, सहमत सेक्स को प्राकृतिक भूख मान लीजिए, बलात्कार अपने आप कम हो जाएंगे।

२.साम्यवादियों की विशेष पहचान :

साम्यवादी को पहचानना बहुत कठिन होता है, क्योंकि उनकी किसी तरह से कोई अलग पहचान नहीं होती, वह आपको साहित्यकार, कलाकार ,गांधीवादी, विचारक किसी भी रूप में मिल सकता है। आप 10-20 वर्षों तक उसके व्यवहार से उसके विचारों से यह नहीं पहचान पाएंगे कि वह साम्यवादी है। लंबे समय तक हम लोग कभी रवीश कुमार को, अपूर्वानंद को, राकेश रफीक को या ऐसे ही अनेक लोगों को नहीं पहचान सके। साम्यवादी बहुत नाटक बाज होते हैं, वह बहुत पढ़ते भी हैं, तर्कशक्ति बहुत तेज होती है, और बहुत व्यवहार कुशल भी होते हैं। वह धार्मिक लोगों के साथ भी बड़े आराम से मिलजुल कर रहते हैं। जीवन भर के अनुभव के बाद, मैं साम्यवादियों की सात प्रकार की पहचान बना पाई है। पहली बात यह है कि साम्यवादी हमेशा हिंसा का समर्थक होता है, करता नहीं है। दूसरा साम्यवादी हमेशा केंद्रित सत्ता का पक्षधर होता है। तीसरा हर साम्यवादी सामाजिक अन्याय दूर करने के नाम पर वर्ग विद्वेष और वर्ग संघर्ष को प्रोत्साहित करता है। चौथा हर साम्यवादी श्रम के साथ न्याय की वकालत करता है और हमेशा श्रम-शोषण के सिद्धांतों पर कार्य करता है। मैंने आज तक एक भी साम्यवादी ऐसा नहीं देखा जो श्रम-शोषण की नीतियों का पक्षधर ना हो। पांचवा कोई भी साम्यवादी सामाजिक व्यवस्थाओं का विरोध करेगा ही। परिवार व्यवस्था, गांव की व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था का विरोध करेगा ही। साम्यवादी हिंदू धर्म का विरोध करेगा, इस्लाम का समर्थन करेगा, वर्ण व्यवस्था का विरोध करेगा, जाति व्यवस्था का समर्थन करेगा। छठा हर साम्यवादी बाजार व्यवस्था का विरोध करेगा और सरकार की अर्थव्यवस्था का समर्थन करेगा। हर साम्यवादी चाहता है, कि आर्थिक स्वतंत्रता में सरकार का दखल अधिक से अधिक हो। सातवां हर साम्यवादी योग्यता, स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा में किसी न किसी प्रकार का विरोध करेगा। इस तरह साम्यवादी किसी भी विरोध में खुद सामने नहीं आता, बल्कि दूसरों के कंधों पर बंदूक रखकर चलाता है। आप जिस व्यक्ति के अंदर यह सात प्रकार के गुण देखे, उसे आप आंख बंद करके मान लीजिए कि वह साम्यवादी है भले ही वह कितना भी इंकार क्यों ना करें।

वस्तुतः साम्यवाद सबसे अधिक खतरनाक विचारधारा है इसलिए किसी भी साम्यवादी से बहुत सावधान रहना चाहिए। लेकिन मेरे जीवन भर के निष्कर्ष में मैंने मुसलमान के विषय में यह पाया कि साम्यवादियों की तुलना में मुसलमान लोग अच्छे होते हैं। साम्यवादी सांप के सरीखे चालाक और खतरनाक होते हैं, गुप्त आक्रमण कर सकते हैं, मुसलमान सिर्फ सांप्रदायिकता के मामले में और महिलाओं के मामले में ही खतरनाक होते हैं अन्यथा अन्य मामलों में मुसलमान विश्वसनीय होता है। मैंने अपने जीवन में जिन मुसलमान से मित्रता की उन मुसलमान में से किसी ने मुझे धोखा नहीं दिया। यह आवश्यक है कि धार्मिक मामलों में मुसलमान को धर्मगुरु से जो आदेश मिलता है वह आंख बंद करके मान लेता है दूसरी बात कि मुसलमान को अपने घर के नजदीक बसाने से बचना चाहिए क्योंकि मुसलमान से महिलाओं को बचाना बहुत कठिन होता है। इस तरह मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मुसलमान इसाईयों अथवा हिंदुओं की तुलना में तो बुरे होते हैं और साम्यवादियों की तुलना में अच्छे होते हैं। इसलिए मुसलमान के साथ सावधानी पूर्वक संबंध बनाया जा सकता है, मुसलमान को घरों में आने जाने से तो बचना चाहिए, लेकिन व्यावसायिक या अन्य मामलों में उनसे खतरा नहीं होता। सभी मुसलमान बुरे होते हैं, मैं इस बात से सहमत नहीं हूं, लेकिन सभी कम्युनिस्ट बुरे होते हैं, इस बात से मैं सहमत हूं।

३.सामाजिक एकता के लिए जनजागरण ही मार्ग :

हम यह बात सिद्ध कर चुके हैं कि समाज में आई हुई अधिकांश बुराइयों का मुख्य कारण राजनीतिक व्यवस्था में छिपा हुआ है। अब तक हम लोगों को उम्मीद थी कि नरेंद्र मोदी सरकार इस कमजोरी को ठीक कर लेगी, लेकिन अब इस तरह की कोई संभावना नहीं है। क्योंकि बुराइयां राजनीतिक सत्ता में नहीं है बल्कि बुराइयां संवैधानिक व्यवस्था में है। जब तक भारत के संविधान में आवश्यकता अनुसार संशोधन नहीं होंगे, तब तक हम इन बुराइयों को ठीक नहीं कर पाएंगे। किसी भी राजनीतिक सत्ता में अब वह ताकत नहीं है, कि वह संविधान में कोई उचित संशोधन कर सके। इसलिए हम लोगों ने यह तय किया है कि अब हम भारतीय जनता पार्टी या नरेंद्र मोदी से कोई उम्मीद छोड़कर समाज में जन जागरण करें। अब तक भारतीय जनता पार्टी और नरेंद्र मोदी संघ की लाइन पर चल रहे थे। स्पष्ट है कि संघ ईमानदार, चरित्रवान, राष्ट्रभक्त और अच्छे लोगों को एकजुट करना चाहता है। वर्तमान संवैधानिक व्यवस्था में यह संभव नहीं है क्योंकि व्यक्ति तीन प्रकार के हैं एक होते हैं देवता जिन्हें हम अच्छे लोग मानते हैं, एक होते हैं मनुष्य यह स्थिति अनुसार दोनों तरफ ढल जाते हैं और एक होते हैं राक्षस जो हमेशा समाज पर अत्याचार करते हैं। संघ देवताओं को एकजुट करना चाहता है, यह बिल्कुल असंभव हो गया है। अब वर्तमान व्यवस्था में हम लोग निर्णायक पहल करने की सोच रहे हैं। हम अच्छे लोगों को एकजुट नहीं कर रहे हैं, हम बुरे लोगों के खिलाफ सबको एकजुट करेंगे, चाहे वे देवता हों या मनुष्य। हम ईमानदार चरित्रवान लोगों को एकजुट नहीं करेंगे, बल्कि हम यह प्रयास करेंगे कि साम्यवाद सांप्रदायिक इस्लाम और नेहरू परिवार के मिलीजुली ताकत से कौन सी शक्ति मुकाबला कर सकती है। वह शक्ति एकजुट हो जाए, चाहे उस शक्ति में बीजेपी हो या कांग्रेस हो या इसाई हो या सिख हो या अन्य कोई भी क्यों न हों। यदि इस कार्य के लिए साम्यवादी सांप्रदायिक मुसलमान और नेहरू परिवार को छोड़कर कोई मिली जुली सरकार भी बनती है, तो हमें कोई परहेज नहीं है। हम पूरी ताकत लगाएंगे कि अब देश में नक्सलवाद कश्मीरी आतंकवाद फिर से ना पनप सके, भले ही कोई भ्रष्ट और चरित्रहीन ही सरकार क्यों ना आ जाए। हमारा पूरा प्रयास होगा कि समाज में राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था मजबूत हो। हम राजनेताओं के पीछे अब आंख बंद करके चलने का समर्थन नहीं करेंगे, हम अब आंख खोल कर नेताओं के साथ खड़े रहे खड़े होंगे। मैं आपसे फिर निवेदन करता हूं कि हम लोगों को सामाजिक एकता के लिए निरंतर काम करना चाहिए।

४. राजनैतिक लाभ हानि के परे सत्यासत्य का उद्घाटन :

वर्तमान राजनीतिक वातावरण समाज व्यवस्था के लिए बहुत घातक हो गया है। आज देश में कई बातें बिल्कुल साफ-साफ समझ में आ रही हैं लेकिन बोलने वालों का अभाव हो गया है, क्योंकि अधिकांश लोग राजनीतिक लाभ-हानि के आधार पर समाज का आकलन कर रहे हैं। हम जानते हैं कि सारी समस्याओं की जड़ भारतीय संविधान में है, लेकिन हम बोल नहीं सकते, क्योंकि बोलते ही मोदी सरकार को नुकसान उठाना पड़ सकता है। हम जानते हैं कि जातीय आरक्षण अथवा जाति जनगणना समाज के लिए घातक है, किंतु हम बोल नहीं सकते क्योंकि ऐसा बोलते ही हिंदुओं में विभाजन का खतरा पैदा हो जाएगा। कंगना रनौत ने जो भी बात कहा है, वह सामाजिक दृष्टि से बिल्कुल सही है और राजनीतिक दृष्टि से पूरी तरह गलत है, लेकिन कंगना रनौत को अपने राजनीतिक हितों के कारण अपनी बात से पीछे हटना पड़ा। हम अच्छी तरह जानते हैं कि भारत के उद्योगपतियों को लगातार प्रोत्साहन देने की जरूरत है, लेकिन हम इस बात को बोल नहीं सकते क्योंकि यदि बोल देंगे, तो गरीब लोगों के वोट हमसे दूर हो जाएंगे। इन परिस्थितियों में अब समय आ गया है, कि हम सच बात बोलने की हिम्मत उठाने की पहल करें। हम खुलकर कहें कि वर्तमान संविधान गलत है, हम खुलकर कहें की जाति जनगणना गलत है। हम अपनी बात को अब सामाजिक लाभ-हानि की दृष्टि से जोड़ कर देखें, राजनीतिक लाभ-हानि की दृष्टि से नहीं, क्योंकि राजनीति समाज के विपरीत दिशा में जा रही है। अब हम सत्ता संघर्ष का मोह छोड़कर राजनीतिक व्यवस्था में बदलाव के लिए जन जागरण करें। स्पष्ट है कि अब हमें लोक स्वराज के लिए और समाज सशक्तिकरण के लिए आगे आना चाहिए, भले ही हमारे प्रयासों से किसी राजनीतिक दल को नफा नुकसान होता हो। आइये हम आप सब लोग मिलकर सिर्फ दो दिशाओं में ही अपनी शक्ति लगावे, एक है राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था और दूसरी है साम्यवाद सांप्रदायिकता और नेहरू परिवार मुक्त राज्य व्यवस्था।

५ राजनैतिक व्यवस्था या लूटतंत्र

हम सामाजिक चर्चा के अंतर्गत इस निष्कर्ष तक पहुंच चुके हैं, कि नई समाज रचना के लिए हमें राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था को मजबूत करना चाहिए। इसके साथ-साथ हम इस बात का भी प्रयास करें कि इस समाज सशक्तिकरण में आने वाली बाधाओ को भी दूर करें। वर्तमान समय में हमारे सामने सबसे बड़ा संकट वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था ही है। स्वतंत्रता के बाद आज तक हमारी जो राजनीतिक व्यवस्था है, उसके बहुत खराब परिणाम निकले हैं। जनता ने सरकार को मनमाने अधिकार भी दिए और टैक्स भी दिया, लेकिन मनमाना टैक्स वसूलने के बाद भी आम जनता को अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ रहे हैं। वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था का यदि ठीक आकलन किया जाए, तो स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में हमारी आबादी में कुल 9 करोड़ परिवार थे। उस समय केंद्र और प्रदेश सरकार का मिलाकर 400 करोड़ का बजट था। स्पष्ट है कि उस समय करीब प्रति परिवार ₹50 का टैक्स सरकार प्रतिवर्ष हमसे लेती थी। आज तक महंगाई 200 गुनी बढ़ी है, इसका मतलब की प्रति परिवार उस समय के हिसाब से महंगाई का आकलन करके ₹10000 टैक्स होना चाहिए था। वर्तमान बजट का यदि आकलन किया गया, तो वर्तमान समय में कुल मिलाकर 80 लाख करोड़ रुपया हमसे टैक्स के रूप में लिया जा रहा है इसका मतलब प्रति परिवार प्रतिवर्ष हम ढाई लाख रुपया सरकार को टैक्स देते हैं। स्वतंत्रता के समय वर्तमान रुपए के आधार पर अगर हम ₹10000 टैक्स दे रहे थे, तो आज हम ढाई लाख रुपया प्रति परिवार टैक्स दे रहे हैं। बहुत गंभीर प्रश्न है कि रुपया जाता कहां है, और इतना रुपया लेना जरूरी क्यों है। सरकार का कुल टैक्स प्रति परिवार ₹10000 होना चाहिए था, वह बढ़कर के ढाई लाख रुपया हो गया और इसके बाद भी सरकार घाटे में चलती है। स्पष्ट है कि सरकार संवेदनहीन है, उस टैक्स का कोई उसके सामने महत्व नहीं है, हमारा पैसा बर्बाद किया जा रहा है। कहां-कहां बर्बाद होता है और बर्बादी क्यों करती हैं, इस विषय पर हम अगले कुछ दिनों में और बात को साफ करेंगे।

६. लोकतंत्र को खोखला कर रहे ब्लैकमेलरः

हम भारत के लोग स्वतंत्रता के बाद जहां सरकार को ₹50 प्रति परिवार टैक्स देते थे वह टैक्स अब आबादी और महंगाई के आकलन के बाद भी 10 गुना अधिक दे रहे हैं इसके बाद भी सरकार हमेशा घाटे में रहती है। टैक्स बढ़ाने का प्रयत्न करती है। आखिर यह पैसा जाता कहां है? स्वतंत्रता के बाद लगातार किसानों का शोषण हुआ। नेहरू जी के आर्थिक योजनाओं ने कृषि उत्पादन का मूल्य बढ़ने भी नहीं दिया और जिला बंदी करके जहां फसल होती थी, उसको औने-पौने दाम में खरीदने की प्रशासनिक योजना शुरू की। मुझे खूब अच्छी तरह याद है, कि किस तरह किसानों का धान गेहूं या मक्का उत्पादन क्षेत्र में चारों तरफ से घेर कर सस्ते दाम में ले लिया जाता था। किसान लगातार तबाह होते चले गए। पंजाब हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ बड़े किसानों ने संगठित होकर इस योजना के खिलाफ आंदोलन किया, जिसका समर्थन देश भर के किसानों का मिला। सन 91 के बाद नेहरू जी की अर्थ नीति को मनमोहन सिंह के नेतृत्व में रिजेक्ट कर दिया गया और नई अर्थ नीति आई, वहां से धीरे-धीरे संगठित किसानो का मनोबल बढ़ा। अब किसानों के नाम पर सारे देश को लूट लेने की योजना बन गई है। पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान एकजुट होकर पूरे समाज को ब्लैकमेल कर रहे हैं। वे लोग गुंडागर्दी पर उतर गए हैं, उनका पेट बड़ा हो गया है, उनकी शक्ति बड़ी हो गई है। वे किसान के नाम पर सब कुछ लूट लेना चाहते हैं। आज वर्तमान सरकारें इस बात को अच्छी तरह समझ रही हैं, लेकिन किसी भी सरकार में इतनी ताकत नहीं है इन ब्लैक मेलरों का मुकाबला कर सके। यह आवश्यक है कि इन ब्लैकमेलरों से हमें अपनी अर्थव्यवस्था बचानी ही पड़ेगी और बचाने का हमें कोई मार्ग भी नहीं दिखता है।

भारत की आम जनता ने भारत सरकार को मनमाना धन दिया, इसके बाद भी भारत का बजट घाटे में रहा, यह पैसा जाता कहां है? भारत और चीन लगभग एक साथ स्वतंत्र हुए। दोनों की प्राकृतिक संपदा भी लगभग एक समान थी, लेकिन 70 वर्षों में आर्थिक मामलों में चीन बहुत आगे चला गया और भारत चीन की तुलना में बहुत पीछे रह गया, आखिर इन दोनों के बीच कारण क्या है। मैंने इस संबंध में गंभीरता से विचार किया। चीन की तुलना में भारत की जनता ने कई गुना अधिक टैक्स दिए, फिर भी भारत चीन की तुलना में पीछे क्यों रहा? एक कहावत है कि किसी ड्रम में अगर नीचे पेंदी ना हो तो आप कितनी भी तेजी से पानी भरे, वह पानी नीचे जमीन में रिसता चल जाएगा। भारत में हमने जो भी टैक्स दिया उस टैक्स का लगातार दुरुपयोग होता रहा, जो चीन में बिल्कुल नहीं हुआ। चीन में तानाशाही होने के कारण वहां कोई भी ब्लैकमेलर ग्रुप मजबूत नहीं हो पाया। भारत में लोकतंत्र होने के कारण ब्लैकमेल करने वालों की इतनी अधिक संख्या हो गई, कि हम यदि अपना सारा धन भी सरकार को दे दें, तो भी इन ब्लैकमेल करने वालों का पेट नहीं भरेगा। इन ब्लैकमेल करने वालों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है, नए-नए संगठन बना रहे हैं और यह संगठन निरंतर ब्लैकमेल कर रहे हैं। वैसे तो भारत में ब्लैकमेल करने वाले हजारों संगठन बने हुए हैं लेकिन यहां नमूने के तौर पर सात आठ संगठनों की चर्चा करेंगे जो देश की अर्थव्यवस्था को पूरी की पूरी निगल ले रहे हैं। इन ब्लैकमेल कर रहे संगठनों में प्रमुख है किसान, सरकारी कर्मचारी, महिलाएं, राजनेता, अधिवक्ता संघ, मीडिया कर्मी यह संगठन प्रमुख रूप से शामिल हैं। यह सभी अलग-अलग सारे देश को लूट लेना चाहते हैं। यह संगठन हमेशा सरकार को ब्लैकमेल करके अपनी रोजी-रोटी चलने तक ही सीमित रहते हैं।

भारत की अर्थव्यवस्था को लूटने का उपक्रम सरकारी कर्मचारियों के नाम पर किस तरह किया जा रहा है। मुझे यह अच्छी तरह जानकारी है, कि कम्युनिस्ट प्रधानमंत्री नेहरू ने भारत की आम जनता को राजनीतिक रूप से गुलाम बनाने के लिए सरकारी कर्मचारियों की मदद ली। उन्होंने यह प्रयास किया कि अधिक से अधिक सरकारी कर्मचारी

रखे जाएं, अधिक से अधिक विभाग खोले जाएं, सरकारी कर्मचारियों को अधिक से अधिक सुविधाएं दी जाएं, प्रारंभ से ही नेहरू ने सरकारी कर्मचारियों की संख्या लगातार बढ़ाने का प्रयास किया। धीरे-धीरे सरकारी कर्मचारियों की संख्या कितनी अधिक हो गई, कि वह पूरे समाज को ब्लैकमेल करने लगे। जब चाहे तब हड़ताल, जब चाहे तब बंद, जब चाहे तब चक्का जाम। सरकारी कर्मचारियों के पास अधिकतम सम्मान भी था, अधिकतम सुविधा भी थी, अधिकतम वेतन भी था और अधिकतम शक्ति भी थी। इसलिए सरकारी कर्मचारी मजबूत होते चले गए, ब्लैकमेल करने लगे। अब तो धीरे-धीरे सरकारी कर्मचारियों की मांग इतनी अधिक हो गई है, कि अगर सारा देश भी उनको दे दिया जाए, तो सरकारी कर्मचारियों की मांग अधूरी ही रह जाएगी। इन सरकारी कर्मचारियों को हमेशा कम्युनिस्टों का साथ मिलता है, नेहरू परिवार का समर्थन मिलता है। आज भी नेहरू परिवार का हर सदस्य अधिक से अधिक नौकरी देने की वकालत करता है। यह बात पूरी तरह साफ हो गई है कि पूरा देश और हमारी सरकारी व्यवस्था सरकारी कर्मचारियों की गुलाम बन गई है। हमारी अर्थव्यवस्था सरकारी कर्मचारियों की दया पर निर्भर हो गई है। हमें अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए जिस तरह धूर्त किसानों से मुक्ति चाहिए, इस तरह लुटेरे सरकारी कर्मचारियों से भी हमारी अर्थव्यवस्था को बचाने की जरूरत है। इतना ही नहीं, यह आंदोलनकारी किसी तरह की सहानुभूति के पात्र नहीं हैं।

७. गाँधी के ब्लैकमेल से शुरू हुआ लोकतंत्र :

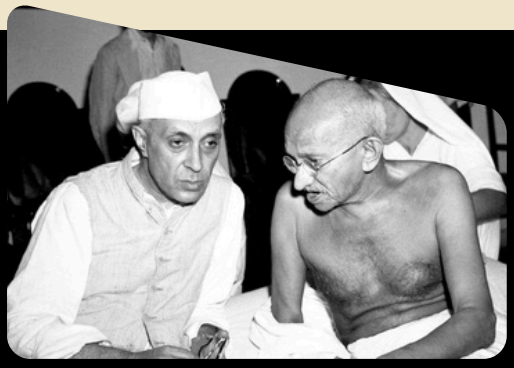

मैं पहले भी कई बार लिख चुका हूं कि दुनिया में साम्यवादी ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जो सबसे अधिक चालाक होता है। स्वतंत्रता के समय नेहरू साम्यवादी थे। नेहरू ने हमेशा दूसरों को ब्लैकमेल किया। पंडित नेहरू ने सबसे पहले गांधी को ब्लैकमेल करना शुरू किया, क्योंकि नेहरू को देश का कोई भी अन्य राजनेता प्रधानमंत्री नहीं देखना चाहता था। नेहरू ने गांधी पर दबाव बनाकर अपने को प्रधानमंत्री घोषित करवा दिया। गांधी की यह मजबूरी थी, कि स्वतंत्रता में कोई बाधा पैदा ना हो सके। दूसरी ओर नेहरू ने लॉर्ड माउंटबेटन को भी अपने साथ मिला लिया था। इस कारण गांधी की मजबूरी हो गई थी, कि वह नेहरू का नाम आगे बढ़ावे। गांधी किसी भी परिस्थिति में नेहरू को नहीं बनाना चाहते थे। यहां तक कि गांधी ने यह भी सुझाव दिया था, कि जिन्ना को प्रधानमंत्री बना दिया जाए। अपनी बात पर अड़े नेहरू ने ना जिन्ना का नाम स्वीकार किया, ना पटेल का नाम स्वीकार किया और अंत में गांधी जी ने नेहरू की बात मान ली। गांधी जी ने यह भी सोचा था कि हम नेहरू को समझा लेंगे या दबा देंगे। जब गांधी ने नेहरू को कांग्रेस भंग करने की सलाह दी, तब भी नेहरू ने अस्वीकार कर दिया। नेहरू के निष्कंटक मार्ग में सबसे बड़ी बाधा गांधी थे, क्योंकि नेहरू गांधी के अलावा दुनिया में किसी से डरते नहीं थे। स्वतंत्रता के तत्काल बाद एक मूर्ख ने नेहरू का काम आसान कर दिया। उस समय नेहरू को सबसे अधिक खतरा संघ से था। गांधी हत्या का दोष नेहरू ने संघ पर डालकर अपना मार्ग और आसान कर लिया। परिणाम हुआ कि अधिकांश देश की जनता संघ के विरुद्ध हो गई। नेहरू इतने चालाक थे कि वे गांधी को धोखा देने के लिए खादी भी पहनते थे और अपने कपड़े धोने के लिए विदेश भेजते थे। इस तरह हम यह स्पष्ट रूप से देख पा रहे हैं कि भारतीय राजनीति में ब्लैकमेलिंग की शुरुआत स्वतंत्रता के ठीक पहले नेहरू के हाथों से शुरू हुई थी और आगे धीरे-धीरे यह ब्लैकमेलिंग बढ़ती गई।

८. नेहरु ने सरकार नामक कम्पनी बनाया न कि तंत्र :

मुझे यह पूरा विश्वास है, कि भारत में राजनीतिक व्यवस्था के गिरावट में खलनायक की भूमिका नेहरू की रही है। पंडित नेहरू गुप्त रूप से पाकिस्तान के पक्ष में थे और चीन के भी पक्ष में थे। भारत का प्रधानमंत्री रहते हुए, नेहरू ने जो महत्वपूर्ण कार्य किया, उनमें कश्मीर को अशांत करना सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। कश्मीर धीरे-धीरे मजबूर होकर पाकिस्तान को दे दिया जाए, यह पृष्ठभूमि लगातार नेहरू ने बनाई थी। नेहरू ने ही दूसरी तरफ चीन के पक्ष में भी वातावरण बनाया। नेहरू ने ही कृष्ण मेनन को जो कम्युनिस्ट थे, उनको बहुत बड़ी जिम्मेदारी दी और उसका परिणाम हुआ कि चीन ने चुपचाप हजारों किलोमीटर जमीन पर कब्जा कर लिया। नेहरू ने एक षड्यंत्र के अंतर्गत एक ऐसी किताब बना दी जो जीवन भर नेहरू परिवार के काम आती रही और उस किताब का नाम 'संविधान' रख दिया। वह संविधान कभी नेहरू खानदान से मुक्त हुआ ही नहीं। यहां तक कि उस संविधान का दुरुपयोग जीवन भर नेहरू ने किया, जीवन भर इंदिरा ने किया और जीवन भर राहुल गांधी भी करने की योजना बना रहे हैं। अपने पंजे के नीचे से संविधान को किसी भी परिस्थिति में नहीं निकलने देना चाहते। नेहरू परिवार ने बड़ी चतुराई से नक्सलवाद को भी बढ़ाया। नेहरू परिवार ने ही बहुत चतुराई से मुसलमान को विशेष अधिकार देकर हिंदुओं को दूसरे दर्जे का नागरिक बना दिया। पंडित नेहरू ने ही सरकार को एक कंपनी का रूप दिया और उस कंपनी के अंतर्गत अपने सारे राजनीतिक और आर्थिक अधिकार सुरक्षित कर लिए। उद्योगपतियों पर 90% से अधिक टैक्स लगाया गया और सारे उद्योग धीरे-धीरे उस कंपनी के अंदर डालते चले गए। यहां तक की आगे चलकर नेहरू परिवार ने ही बैंकों को भी अपने उस कंपनी के अंतर्गत शामिल कर लिया। नेहरू और उनके परिवार की लगातार कोशिश रही कि देश की सारी अर्थनीति उस कंपनी के अंगूठे तले आ जाए। आज भी राहुल गांधी लगातार कोशिश करते हैं कि इसी तरह सरकारी कंपनियां सारे व्यापार को समेट लें। इस तरह राजनीतिक शक्ति और आर्थिक शक्ति पर सिर्फ सरकार का नियंत्रण हो और उस सरकार पर नेहरू खानदान का ही कब्जा हो, यही नेहरू की राजनीति रही है और इस राजनीति में नेहरू सफल भी रहे हैं। अब समय आ गया है कि इस तरह की ब्लैकमेल करने वाली राजनीतिक व्यवस्था से भारत को मुक्त कराया जाए।

९. कम्युनिज्म और सम्प्रदायवाद में फंसा भारत :

भारत की स्वतंत्रता के बाद सामाजिक व्यवस्था को खराब करने में दो लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, उसमें एक है 'पंडित नेहरू' और दूसरे हैं 'वीर सावरकर'। यह दोनों प्रत्यक्ष रूप से भले ही आपस में लड़ते हो, लेकिन दोनों का संघर्ष सिर्फ राजनीतिक सत्ता के लिए था। दोनों को ना कोई समाज से मतलब था, ना धर्म से मतलब था, ना देश से मतलब था, दोनों कुर्सी की लड़ाई लड़ रहे थे। नेहरू और सावरकर ना वर्ण व्यवस्था को पसंद करते थे, ना गाय से प्रेम करते थे। दोनों ही सांप्रदायिक थे, एक मुसलमान को भड़का कर उनको एक जुट करना चाहते थे, दूसरे हिंदुओं को सांप्रदायिक बनाकर उनको एकजुट करना चाहते थे, दोनों ही चालाक थे। नेहरू ने गांधी को ढाल बना लिया था और सावरकर लगातार उस ढाल पर आक्रमण करते रहे। न कभी सावरकर ने नेहरू का नुकसान किया ना ही पंडित नेहरू ने सावरकर का नुकसान किया। इन दोनों के बीच में गुप्त रूप से क्या संबंध थे, यह बात अब तक प्रकाश में नहीं आई है। नेहरू पूरी तरह कम्युनिस्ट थे और सावरकर पूरी तरह सांप्रदायिक थे, यह बात दुनिया जानती है। नेहरू ने गांधीवादियों को धन सम्मान और जमीन देकर उन्हें कम्युनिस्ट बनाया। दूसरी ओर सावरकर ने अपने सब लोगों को धीरे-धीरे संघ में शामिल करा कर, संघ का उपयोग किया। उस समय संघ एक बहुत सम्मानजनक संस्था मानी जाती थी, जो नेहरू का मुकाबला कर सकती थी लेकिन सावरकर की चाल में फंसकर संघ अपने मार्ग से भटक गया। वर्तमान भारत की राजनीतिक स्थिति की समीक्षा करें तो गांधीवादी लगभग समाप्त हो गए हैं। गांधीवादियों में जो भी बचे हैं, वह सब कम्युनिस्ट बचे हैं। सावरकरवादी भी करीब-करीब समाप्त हो गए हैं, अब जो भी सावरकरवादी हैं, वह धीरे-धीरे मोहन भागवत, नरेंद्र मोदी, योगी आदित्यनाथ की संयुक्त टीम के साथ जुड़ते जा रहे हैं। फिर भी वर्तमान संविधान के रहते हुए किसी भी प्रकार की नई व्यवस्था नहीं बन सकती है। वर्तमान संविधान में कोई भी संशोधन नेहरू परिवार किसी भी परिस्थिति में होने ही नहीं देगा। ऐसी स्थिति में समाज के सामने सिर्फ एक ही मार्ग दिखता है, कि सामाजिक जन-जागरण करके समाज को ब्लैकमेल करने वालों को किनारे किया जाए। यह तय है कि नेहरू परिवार और सावरकरवादियों से मुक्त नई व्यवस्था पर विचार करना पड़ेगा।

१०. सामाजिक बुराईयों का राग अलापने वालों से बनानी होगी दूरी :

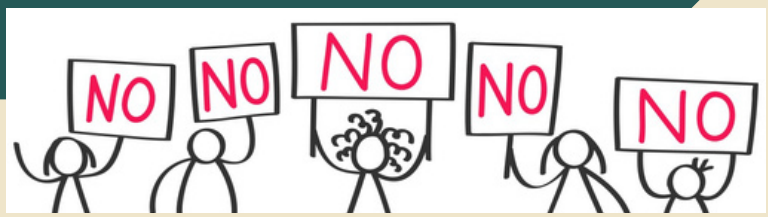

हम एक नई साफ सुथरी समाज व्यवस्था पर लगातार मंथन कर रहे हैं। मैं मानता हूं कि समाज में भी कुछ बुराइयां है, लेकिन समाज की नियत खराब नहीं है। जबकि हमारे संवैधानिक व्यवस्था बनाने वालों की नियत भी खराब है और नीतियां भी। यह संवैधानिक व्यवस्था बनाने वाले राजनीतिज्ञ संवैधानिक बुराइयों की चर्चा ना करके, हमारे सामाजिक बुराइयों का निरंतर लाभ उठाना चाहते हैं। जब तक इन राजनेताओं से हम समाज को नहीं बचा सकेंगे, तब तक हम कभी भी मजबूत नहीं हो सकते। इसलिए मेरा आपसे कहना है कि जो भी राजनेता सामाजिक बुराइयों की चर्चा करता है, उस राजनेता को खटमल मच्छर के समान, समाज का शोषक मानकर उससे दूरी बना लेना चाहिए। राजनेता समाज की बुराइयां दूर नहीं करना चाहता, बल्कि अपनी संवैधानिक राजनीतिक शक्ति को मजबूत करना चाहता है। सच्चाई यह है कि वर्तमान संविधान ही, इन समाज को ब्लैकमेल करने वालों को खाद पानी देता है। हमें यह स्पष्ट धारणा बना लेनी चाहिए, कि हमारी सभी प्रमुख सामाजिक समस्याओं का समाधान, तंत्र-मुक्त संविधान युक्त समाज व्यवस्था है। इसका मतलब है कि हम नई समाज व्यवस्था पर लगातार चिंतन मंथन करते रहेंगे, किंतु अपने भारतीय संविधान को भी तंत्र की गुलामी से मुक्त करने के प्रयास प्राथमिक स्तर पर जारी रखेंगे। क्योंकि जब तक हम संविधान को ब्लैकमेलर इन रक्त चूषक कीट पतंग से सुरक्षित नहीं करेंगे, तब तक हम स्वस्थ नहीं हो सकते। मेरा आपसे निवेदन है कि हम तंत्र मुक्त संविधान और नई समाज व्यवस्था पर एक साथ विचार करते रहें।

११. खतरे में सामाजिक शान्ति :

पूरी दुनिया में सामाजिक शांति खतरे में दिख रही है। चार विचारधाराए हैं एक है पश्चिम का लोकतंत्र, दूसरा है कम्युनिस्टों की तानाशाही, तीसरा है मुस्लिम सांप्रदायिकता और चौथा है भारत की हिंदू विचारधारा। वर्तमान दुनिया में लोकतंत्र को चुनौती दे रखी है, चीन की तानाशाही विचारधारा ने। मुस्लिम विचारधारा बीच में लाभ उठाने की फिराक में है। भारत भी साम्यवाद और लोकतंत्र के बीच दुविधा में फंसा हुआ है। सारी दुनिया में अराजकता बढ़ती जा रही है, भारत में भी अराजकता बढ़ रही है। इस अराजकता का समाधान लोकतंत्र के पास नहीं है। इसका समाधान तो लोक स्वराज से ही हो सकता है। किंतु भारत ना लोक स्वराज पर प्रयोग कर पा रहा है, ना दुनिया को यह संदेश दे पा रहा है। परिणामस्वरूप दुनिया अराजकता और तानाशाही के बीच अनिर्णय की स्थिति में है। भारत में भी राहुल गांधी के नेतृत्व में एक बहुत बड़ा समूह तानाशाही के पक्ष में खड़ा हो रहा है। वह खुलेआम चीन की प्रशंसा करता है, वह खुलेआम मुसलमान की सांप्रदायिकता के पक्ष में खड़ा हो जाता है, वह खुलेआम अपराधियों के पक्ष में खड़ा रहता है। जिस उत्तर प्रदेश को योगी आदित्यनाथ ने बुलडोजर और एनकाउंटर के माध्यम से ठंडा किया था, वहां भी अब अपराधियों का मनोबल बढ़ने लगा है। लगातार ट्रेनों में एक्सीडेंट कराए जा रहे हैं। राहुल गांधी और इंडिया गठबंधन देश में अराजकता का वातावरण पैदा करके, तानाशाही की पटकथा लिख रहे हैं, यह दिशा बहुत खतरनाक है। हमें सारी दुनिया को लोक स्वराज का संदेश देना है। दूसरी तरफ अराजकता हमेशा तानाशाही की भूख पैदा करती है। मुझे यह लगता है कि राहुल गांधी और उनका इंडिया गठबंधन एक बहुत खतरनाक खेल-खेल रहा है। चीन की तानाशाही और मुस्लिम सांप्रदायिकता का इस तरफा खुला समर्थन, देश में अपराधियों का मनोबल बढ़ा रहा है। फिर से इंडिया गठबंधन इस बात पर विचार करें।

१२. न्यायिक सक्रियता की प्राथमिकताएँ क्या? :

सुप्रीम कोर्ट का एक निर्णय, जिसके अनुसार दलित और आदिवासियों को आरक्षण में राज्य सरकारें भी कुछ कानून बना सकती हैं। साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने उन लोगों को आरक्षण से अलग करने की सलाह दी, जो लोग आरक्षण का लाभ लेकर बहुत अधिक प्रगति कर चुके हैं। स्वाभाविक है कि आरक्षण का लाभ ले चुके लोग, अपनी सात पीढ़ियों तक को आरक्षण के लाभ तक सीमित करना चाहते थे। सुप्रीम कोर्ट अपने इस निर्णय के लिए बधाई का पात्र है। एक दूसरी घटना भी हुई कि सुप्रीम कोर्ट ने स्वयं अपनी ओर से तत्काल संज्ञान लेते हुए कोलकाता में एक महिला डॉक्टर की बलात्कार और हत्या के संबंध में त्वरित कार्यवाही की, इस बात की भी देशभर में प्रशंसा हुई। लेकिन इसके साथ-साथ एक घटना और हुई कि राजस्थान में 32 वर्ष पूर्व कुछ लोगों ने सैकड़ो महिलाओं के साथ बलात्कार या यौन शोषण किया। हमारे भारत की न्यायपालिका में 32 वर्ष बाद उस मामले में अभियुक्त को आजीवन कारावास की सजा दी है। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ में एक घटना घटित हुई। एक व्यक्ति ने अपने पत्नी की हत्या कर दी। वह जेल से छूट गया, छूटने के बाद उसने भाई की हत्या कर दी वह फिर जेल से छूट गया और छूटने के बाद उसने अपनी दूसरी पत्नी की हत्या कर दी। यह प्रश्न साफ खड़ा होता है कि न्यायिक सक्रियता की प्राथमिकताएं क्या है? अब इन घटनाओं के साथ हम एक घटना पर और गंभीरता से विचार करें कि कल ही बरेली में दो खूंखार अपराधियों को पुलिस ने गोलीमारी वह मरे या घायल है यह अभी ज्ञात नहीं है, लेकिन इतना जरूर स्पष्ट है कि दोनों पर 20-20 मुकदमें चल रहे थे। अब विचारणीय प्रश्न यह है कि हम पुलिस की प्रशंसा करें या न्यायालय की प्रशंसा करें। भारत की न्यायपालिका को अपनी प्राथमिकताओं पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। नमूने के लिए एक दो मामलों पर त्वरित कार्यवाही कर देना आदर्श न्यायपालिका का सिद्धांत नहीं है।

१३. नेहरू परिवार की मुहब्बत की दुकान :

आजकल प्रतिदिन ही राहुल गांधी मोहब्बत की दुकान की चर्चा करते हैं, लेकिन यह कोई नई दुकान नहीं है। पंडित नेहरू ने भी स्वतंत्रता से एक-दो साल पहले ही मोहब्बत की दुकान शुरू कर दी थी। उस दुकान में एक विदेशी और विधर्मी महिला ग्राहक थी। यह भी हम लोगों ने सुना है, कि बाद में उस दुकान का चार्ज इंदिरा गांधी ने संभाल लिया और उन्होंने भी एक विदेशी को ग्राहक बना लिया। फिर बाद में उस दुकान का चार्ज राजीव गांधी को मिला और राजीव जी की दुकान में भी कोई भारतीय या स्वधर्म ग्राहक नहीं आया। अंत में उन्होंने विदेशी, विधर्मी को ही माल बेचना शुरू किया। अब उस दुकान का चार्ज राहुल गांधी के पास है। अब तक तो कोई भारतीय इस मोहब्बत की दुकान में आया नहीं है। अब भविष्य में कहां से ग्रहण करेंगे, यह आगे पता चलेगा। इस मोहब्बत की दुकान का ट्रेडमार्क गांधी है, अहिंसा और वर्ग समन्वय इनकी दुकान के प्रमुख माल है। वर्तमान में इस दुकान का संचालन तीन लोग मिलकर कर रहे हैं सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी और राहुल गांधी। सोनिया गांधी महिला सशक्तिकरण का नारा लगती है, सोनिया गांधी महिलाओं को आरक्षण देना चाहती हैं। प्रियंका गांधी हमेशा 'लड़की हूं लड़ सकती हूं' इस बात की पक्षधर है और राहुल गांधी युवकों को कराटे सीखा रहे हैं। 'अहिंसा' का नाटक 'गांधी' का ट्रेडमार्क और कराटे, लड़की हूं लड़ सकती हूं, महिला सशक्तिकरण जैसे परिवार तोड़क नारे। दोनों का मेल नहीं खाता है, लेकिन यह नाटकबाज नेहरू से लेकर राहुल तक हमेशा इसी प्रकार का नाटक करके अपनी राजनीतिक दुकान चलाते रहते हैं। मोहब्बत की इस दुकान का पोल खोलना आवश्यक है। हिंसा, वर्ग विद्वेष, हिंदुत्व विरोध ही इस दुकान में बिकते हैं।

१४. संघ और भाजपा की समझौतावादी रणनीति :

चार जून के बाद संघ ने भी अपनी नीतियों में बदलाव किया है, जिस तरह संघ ने जाति जनगणना पर यू टर्न लिया, वह इसका स्पष्ट प्रमाण है। इसके पहले भी मोदी सरकार अनेक मुद्दों पर अपनी योजना से पीछे हट चुकी हैं। खालिस्तान सिखों के मामले में भी सरकार के रुख में बदलाव दिख रहा है। भ्रष्टाचार के मामले में भी हेमंत सोरेन से लेकर अरविंद केजरीवाल तक को सरकार की तरफ से रियायतें दी जा रही है। सदस्यता अभियान में भी मुसलमानों को बड़ी संख्या में जोड़ा जा रहा है। राजनीतिक दृष्टि से यह सारे प्रयत्न बिल्कुल ठीक दिशा में हो रहे हैं। अब राहुल गांधी की शक्ति और आगे ना बढ़ सके, इस तरह के सभी प्रयत्न किए जा रहे हैं। मैं वर्तमान राजनैतिक परिस्थितियों का आकलन करते हुए, इन सभी बदलावों को एक मजबूरी समझता हूँ। सत्ता प्राप्त करने के लिए, जब राहुल गांधी सारे गलत कार्य करने की जी-तोड़ कोशिश कर रहे हैं, तो ऐसी परिस्थितियों में राहुल गांधी को असफल करने के लिए जो भी कदम उठाए जाएं, वह सब उठाने ही चाहिए। फिर भी मैं सरकार से यह उम्मीद करता हूँ, कि वह नक्सलवाद और कश्मीर में धारा 370 के संबंध में किसी प्रकार का कोई समझौता नहीं करेगी। नक्सलवाद और आतंकवाद राष्ट्र के लिए बहुत बड़ी समस्या है। राहुल गांधी किसी भी परिस्थिति में नक्सलवाद और कश्मीरी आतंकवाद को कमजोर नहीं होने देंगे। सरकार को चाहिए कि वह किसी भी कीमत पर इन दोनों से देश को मुक्ति दिलाए।

१५. अपराधियों के राजनैतिक संरक्षण की राजनीति :

एक नासमझ नेता अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश में हुए एनकाउंटर पर, यह कह कर प्रश्न उठाया था कि उसमें जाति देखकर एनकाउंटर हुआ है, पक्षपात हुआ है। आज एक दूसरे नासमझ नेता राहुल गांधी ने तो यह बात भी कह दी है कि एनकाउंटर होना ही नहीं चाहिए, क्योंकि यह कार्य तो गैरकानूनी होने से पूरी तरह अन्याय है। मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि ऐसे-ऐसे नासमझ लोग देश के प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं। जिन्हें आज तक यह भी पता नहीं है कि न्याय क्या होता है और कानून क्या होता है। किसी अपराधी को दंड मिलना न्याय है और उस दंड की प्रक्रिया कानून है। इसका अर्थ यह हुआ कि न्याय हमेशा प्राकृतिक आवश्यकता है कानून उसका माध्यम है। कानून न्याय का मार्ग हो सकता है लेकिन कानून न्याय से ऊपर नहीं हो सकता। यदि न्याय और कानून के बीच कभी भ्रम या टकराव होता है, तो न्याय के अनुसार कानून की परिभाषा बदली जाती है। कानून के अनुसार न्याय की परिभाषा कभी नहीं बदल सकती। मैंने तो अपने जीवन के अनेक लेखों में एनकाउंटर के पक्ष में विचार व्यक्त किए हैं। पंजाब में इसी तरह के एनकाउंटरों के माध्यम से पंजाब को शांत किया गया था। नक्सलवाद को भी दबाने में एनकाउंटरों का सहारा लिया गया, कश्मीर में भी ऐसे एनकाउंटर हुए, जो कानून सम्मत नहीं थे। अगर उत्तर प्रदेश में भी इस तरह के अपराधियों का एनकाउंटर हो रहा है, तो इसमें अन्याय क्या है? जब तक की कोई निरपराध नहीं मारा जाता। मेरे विचार से इन नासमझ बच्चों को न्याय और कानून का फर्क समझने की जरूरत है। अगर नहीं समझ पाए तो हम लोगों से पूछने की जरूरत है, इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण बयान देने से आपकी अयोग्यता सिद्ध हो जाती है। किसी एनकाउंटर के विरुद्ध आवाज उठाने के पहले, आपको यह बात व्यक्तिगत रूप से जान लेनी चाहिए कि 'क्या वह व्यक्ति निरपराध है?' मेरा इस नासमझ जोड़ी से यह निवेदन है कि वे इस प्रकार के सामाजिक मामलों में सोच कर बोलना शुरू करें।

१६. INDI गठबंधन कितना 'INDIAN'? :

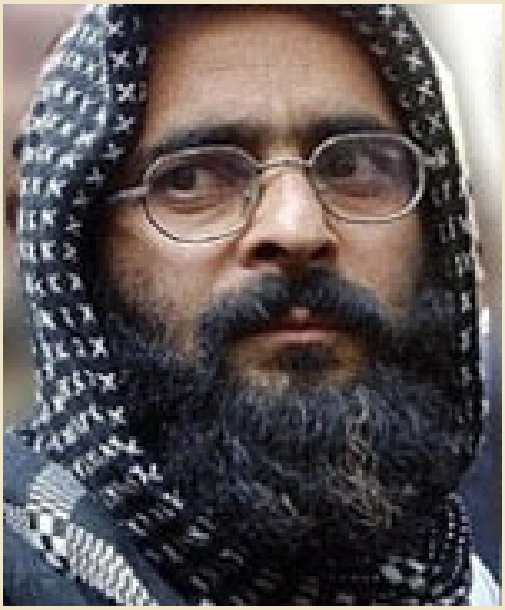

राजनीतिक विषयों पर चर्चा के अंतर्गत हम यह देख रहे हैं कि इंडिया गठबंधन के नेता किस प्रकार देश में विभाजनकारी बयान दे रहे हैं। इंडिया गठबंधन के एक प्रमुख नेता उमर अब्दुल्ला ने आज बयान दिया है कि संसद पर आक्रमण करने वाले अफजल गुरु को फांसी देना उचित नहीं था। उन्होंने यह भी बयान दिया है कि हम कश्मीर को उत्तर प्रदेश या असम के मार्ग पर नहीं चलने देंगे। आप सब लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि उमर अब्दुल्ला के साथ राहुल गांधी एकजुट होकर चुनाव लड़ रहे हैं। राहुल गांधी तथा इंडिया गठबंधन का उमर अब्दुल्ला को पूरा-पूरा समर्थन है। उमर अब्दुल्ला इसके पहले भी बयान दे चुके हैं कि कश्मीर में धारा 370 फिर से लागू होनी चाहिए। उनके कथनानुसार कश्मीर में दो संविधान अलग-अलग हो, दो झंडा अलग-अलग हो। कश्मीर की एक स्वतंत्र पहचान बननी चाहिए। मैं नहीं समझ सका कि उमर अब्दुल्ला के इस प्रकार के खतरनाक विभाजनकारी बयान का, राहुल गांधी का समर्थन क्यों है? वैसे मैं जानता हूं कि उमर अब्दुल्ला जो भी बोल रहे हैं, वह राहुल गांधी के भी मन की बात है। राहुल गांधी भी गुप्त रूप से पाकिस्तान और चीन की भाषा बोलते हैं, लेकिन उमर अब्दुल्ला ने वह बात खुलकर कह दी है। अब देश की जनता को यह विचार करना होगा कि 'इंडिया गठबंधन' कितना इंडियन है, कितना पाकिस्तानी है, कितना चीन का पक्षधर है और इंडिया गठबंधन का किस सीमा तक समर्थन किया जाना चाहिए?

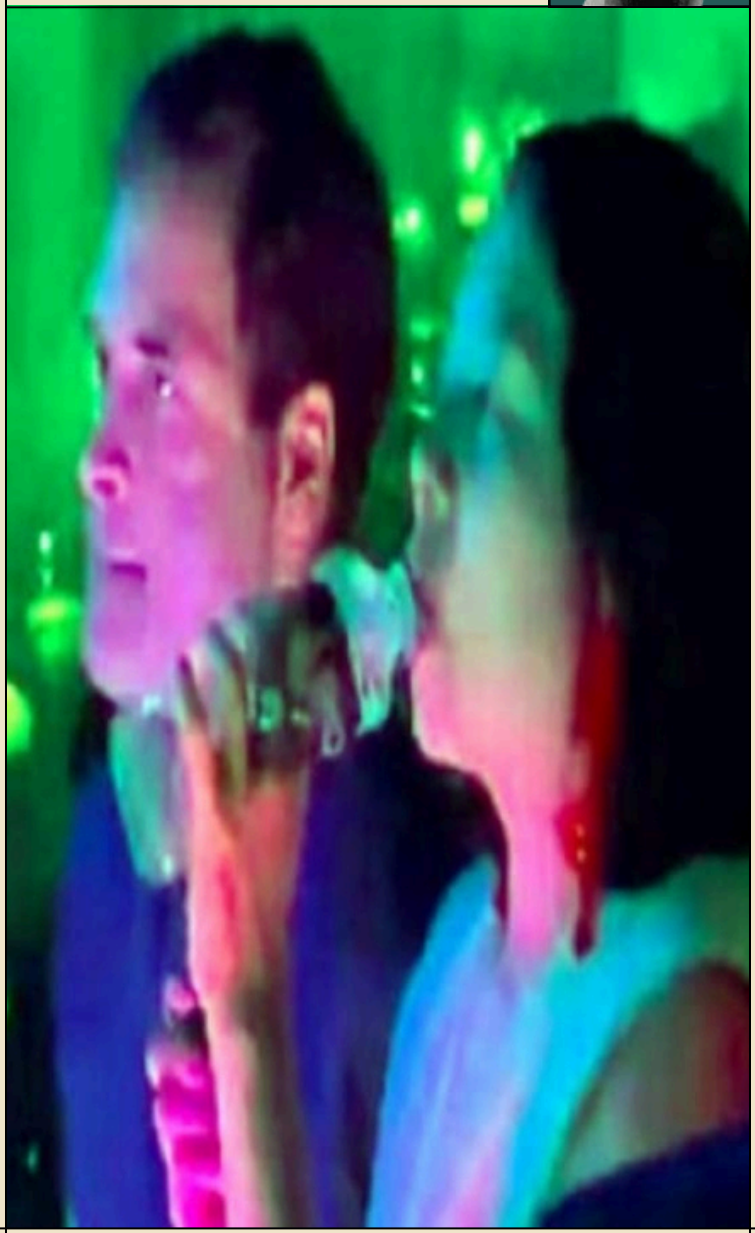

१७. भारतीय प्रधानमंत्री की वैश्विक भूमिका :

नरेंद्र मोदी को रूस सरकार ने यूक्रेन युद्ध में मध्यस्थता करने की अपील की है। रूस ने भी नरेंद्र मोदी पर विश्वास प्रकट किया है और यूक्रेन ने भी विश्वास प्रकट किया है। नरेंद्र मोदी अनेक मुस्लिम देशों की भी यात्रा कर रहे हैं, और दुनिया के कई मुस्लिम देशों ने भी नरेंद्र मोदी पर भरोसा व्यक्त किया है। राहुल गांधी लंबे समय से इस बात का प्रयत्न कर रहे हैं, कि नरेंद्र मोदी को दुनिया का भ्रमण नहीं करना चाहिए। कई बार राहुल गांधी में इस बात पर आपत्ति की मणिपुर जल रहा है, और नरेंद्र मोदी दुनिया भर की आग बुझा रहे हैं। नरेंद्र मोदी लगातार अपने तरीके से पूरे दुनिया की आग बुझाने में सक्रिय रहे। राहुल वर्षों से छाती पीट पीटकर चिल्लाते रहे कि भारत में इस्लाम खतरे में है, लेकिन पाकिस्तान को छोड़कर अन्य मुस्लिम देशों ने राहुल की कोई बात नहीं सुनी। राहुल गांधी को यह बात मालूम होती है, तो राहुल गांधी पूरी तरह जल भून जाते हैं। क्योंकि राहुल को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं है, की नरेंद्र मोदी दुनिया भर में लोकप्रिय होते जाएं। नरेंद्र मोदी भी इस बात को जानते हैं कि मणिपुर की आग लगी नहीं है, लगाई गई है। मणिपुर में कोई आपसी झगड़ा नहीं था, सिर्फ आरक्षण के माध्यम से जो आग लगाई गई थी, उस आग ने एक विस्फोट का रूप ले लिया। मैं इस बात को आज से नहीं बहुत लंबे समय से समझता हूं कि भारत के अन्य प्रदेशों में भी आरक्षण के नाम पर जो आग लगाई जा रही है। उस तरह की घटनाएं मणिपुर ही नहीं अन्य प्रदेशों में भी होना अवश्यंभावी है। चाहे प्रधानमंत्री कोई भी क्यों ना हो, क्योंकि आरक्षण की आग हमेशा समाज को जलाती है। आज राहुल गांधी पूरे भारत में घूम-घूम कर जो आरक्षण के शोले फेक रहे हैं, उसका भविष्य बहुत खराब होगा। भविष्य में मणिपुर की तरह ही भारत के अन्य क्षेत्रों में भी विस्फोट होंगे और सारा दोष नरेंद्र मोदी पर डाला जाएगा। लेकिन मैं इस बात की प्रतीक्षा में हूं, कि यदि भारत दुनिया भर में आग बुझाने की सामर्थ रखता है, तो भले ही राहुल गांधी के कलेजे में कितनी भी आग क्यों न लग जाए, दुनिया की आग बुझाना हमारे लिए प्राथमिकता होनी चाहिए। यह भारत के लिए एक गौरव का विषय है।

१८. राहुल वैचारिक रूप से साम्यवादी तानाशाही के पक्षधर :

राहुल गांधी ने अमेरिका दौरे पर कुछ बातें बहुत महत्व की कही है। पहली बात राहुल गांधी ने यह कही है कि अब भारत में बहुत तेजी से सरकारी नौकरियों में संघ के लोगों का प्रवेश हो रहा है, जो खतरनाक है, बात तो सच है। करीब 75 वर्षों तक संघ के लोगों को सरकारी नौकरियों से वंचित रखा गया। संघ पर प्रतिबंध लगाया गया कि वे सरकारी नौकरी नहीं कर सकते क्योंकि सरकारी नौकरियां तो मुख्य रूप से कम्युनिस्ट के लिए रिजर्व थी। जेएनयू बनाकर कम्युनिस्ट को पूरी सुविधा दी गई कि वह हर सरकारी विभाग में ऊपर से नीचे तक छा जाए। न्यायपालिका से लेकर कार्यपालिका तक हर जगह कम्युनिस्टों का प्रभाव बढ़ता रहा और संघ के लोगों को रोक दिया गया। अभी सिर्फ 2 महीने ही बीते हैं, जब संघ के लोगों को किसी सरकारी नौकरी में जाने की स्वतंत्रता मिली है। दो महीने में ही राहुल गांधी को इतनी चिंता हो गई कि उन्होंने अमेरिका में जाकर यह चिंता व्यक्त की। दूसरी बात राहुल गांधी ने अमेरिका में यह भी कहीं कि चीन की व्यवस्था बहुत ही अच्छी है। यह ज्ञान भी राहुल गांधी को कम्युनिस्ट बनने के बाद ही आया, पहले से नहीं था। यह भी हो सकता है कि जब चीन ने राहुल गांधी की आर्थिक मदद की उसके बाद धीरे-धीरे राहुल गांधी को यह अनुभव हुआ हो। विचित्र बात है कि राहुल गांधी एक तानाशाह देश की इस प्रकार खुली वकालत कर रहे हैं। मैं मानता हूं कि राहुल के पूरे खानदान के लोग या तो तानाशाह रहे हैं या कम्युनिस्ट रहे हैं। नेहरू पूरी तरह कम्युनिस्ट थे, तानाशाह भी थे, इंदिरा गांधी तानाशाह थी कम्युनिस्ट नहीं थी, सोनिया गांधी ने भी अटल जी के विरुद्ध साम्यवाद का पूरा सहयोग लिया और मनमोहन सिंह के ऊपर 16 कम्युनिस्टों की एक फौज खड़ी कर दी। अब राहुल गांधी भी महसूस कर रहे हैं कि तानाशाही ही भारत का सबसे अच्छा समाधान है। यदि भारत में इस तरह तानाशाही का समर्थन किया गया तो, यह तो संभव है कि नरेंद्र मोदी की जगह देश योगी आदित्यनाथ को प्रधानमंत्री पद के लिए निमंत्रित कर दे, लेकिन राहुल सरीखे नासमझ का तो नंबर ही कभी नहीं लगने वाला। वैसे 4 जून के बाद राहुल गांधी की देशभक्ति की पोल बहुत तेजी से खुल रही है।

राहुल गांधी ने अमेरिका में यह बात भी साफ की है कि हमारा संघ से सत्ता संघर्ष नहीं है बल्कि हमारी लड़ाई विचारधाराओं की है। संघ एक विचारधारा हिंदू को मानकर चलता है। कांग्रेस मानती है कि 'भारत' हिंदू, मुसलमान, दलित, आदिवासी, गरीब, पिछड़े इन सब अलग-अलग समूहों का संगठन है, ना की सिर्फ हिंदुओं का। हम लोगों की संस्था इन दोनों विचारधाराओं को स्वीकार नहीं करती। हम ना तो भारत को हिंदू राष्ट्र मानते हैं, ना भारत को कुछ वर्गों का समूह मानते हैं। हम तो मानते हैं कि भारत 140 करोड़ व्यक्तियों का संघ है। इसका अर्थ यह हुआ कि भारत वर्ग विभेद को स्वीकार नहीं करता, भारत तो सिर्फ दो ही वर्ग मानता है, अच्छे और बुरे। हिंदू, मुसलमान, आदिवासी, दलित यह किसी भी दृष्टि से मान्यवर्ग नहीं है।

इसलिए मैं ऐसा मानता हूं कि अब भारत को किसी भी प्रकार का वर्ग-भेद अस्वीकार कर देना चाहिए। चाहे वह वर्ग-भेद हिंदू-मुसलमान के नाम पर हो अथवा दलित, गरीब, महिला, आदिवासी या अन्य किसी नाम पर। मैं राहुल गांधी के विचार को बहुत अधिक घातक मानता हूं, लेकिन संघ के विचार को भी मैं पूरी तरह स्वीकार नहीं करता। भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए समान कानून होना चाहिए और भारत के प्रत्येक व्यक्ति के समान मौलिक अधिकारों के सुरक्षा की गारंटी होनी चाहिए।

१९. उग्रवाद और वर्ग-विद्वेष की राजनीति :

राहुल ने अमेरिका में एक ऐसा गंभीर झूठ बोल दिया कि मैं आज उस पर चर्चा करने के लिए मजबूर हो गया। मैं लंबे समय से लिखता रहा हूं कि राहुल गांधी बहुत झूठ बोलते हैं। लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि राहुल गांधी अब केवल झूठ ही बोलते हैं, सच बोलते ही नहीं है। वे इतना भी बड़ा झूठ बोल सकते हैं, जिसमें एक नया पैसा भी कोई सच्चाई ना हो। अमेरिका में राहुल गांधी ने एक सभा में जिसमें बड़ी मात्रा में सिख उग्रवादी मौजूद थे, उनकी प्रशंसा करते हुए यह कहा कि क्या भारत में सिखों को पगड़ी पहनने की स्वतंत्रता है, क्या गुरुद्वारा जाने की स्वतंत्रता है, क्या वे हाथों में कड़ा स्वतंत्रता से पहन सकते हैं? यह तीन बातें राहुल ने अमेरिका में अपने स्वार्थ से कही है। राहुल गांधी को यह बात अच्छी तरह पता है कि पंजाब और दिल्ली में अरविंद केजरीवाल को कमजोर करने के लिए उग्रवादी सिखों की मदद की बहुत जरूरत है। राहुल गांधी ने यह बात भी सुन रखी है कि विदेशी सिख, उग्रवादी भारत में आम आदमी पार्टी को बहुत बड़ा चंदा देते रहे हैं। इस समय राहुल गांधी पैसे के भी संकट से जूझ रहे हैं और आम आदमी पार्टी से भी परेशानी अनुभव कर रहे हैं, इसलिए राहुल गांधी ने वहां इतना बड़ा झूठ बोला। राहुल गांधी के भाषण के तत्काल बाद उग्रवादी सिखों ने वहीं राहुल की प्रशंसा शुरू कर दी। पाकिस्तान से भी राहुल को बधाइयां मिलने लगी और राहुल अपनी बहादुरी पर खुश हो गए। लेकिन राहुल गांधी ने यह नहीं सोचा कि राजनीतिक लाभ के लिए समाज का विभाजन देश की एकता को खतरे में डालना कितना उचित है।

हम जानते हैं कि कुछ वर्ष पहले ही मोहन भागवत ने बिल्कुल सही कहा था कि आरक्षण की समीक्षा होनी चाहिए। और समीक्षा के बाद, आरक्षण पर विचार विमर्श करके निष्कर्ष निकलना चाहिए। उस समय राहुल गांधी ने आसमान सर पर उठा लिया था कि संघ आरक्षण का विरोधी है। अब संघ ने यह कह दिया है कि हम आरक्षण का समर्थन करते हैं तो राहुल गांधी ने भी अमेरिका में यह बयान दे दिया कि 'मेरे विचार से समय-समय पर आरक्षण की समीक्षा होनी चाहिए और आरक्षण से यदि लोग लाभ प्राप्त कर चुके हैं, तो आरक्षण को समाप्त कर देना चाहिए'। वास्तव में हम लोग पूरी तरह आरक्षण विरोधी थे, आरक्षण विरोधी है, भविष्य में भी रहेंगे। मोहन भागवत क्या बोलते हैं, राहुल गांधी क्या बोलते हैं, यह भाषा राजनीतिक है। लेकिन यदि राहुल गांधी ने यह बात कही है, तो हम राहुल गांधी की इस बात का समर्थन करते हैं कि आरक्षण की समीक्षा की जानी चाहिए और परिस्थिति अनुसार आरक्षण को समाप्त भी करने के विषय में सोचा जाना चाहिए।

२०. ज़ूम पर होने वाले 'चर्चा' कार्यक्रम से :

साथियों, नमस्कार। कल हम लोग 'वासना' के विषय में बात कर रहे थे। व्यक्ति के अंदर अनेक तरीके की भूख होती है - शारीरिक भूख, मानसिक एवं आध्यात्मिक भूख। यही भूख उनकी दिशा तय करती है। यह स्वाभाविक है कि इस भूख का असर उसकी उम्र के साथ जुड़ा होता है लेकिन यह जरूरी भी नहीं है कि सभी अपनी भूख के वशीभूत होकर ही जीते हैं। इसके अनेक विपरीत उदाहरण भी समाज में मिलते हैं। व्यक्ति अपनी चेतना शक्ति को विकसित करके भूख पर नियंत्रण कर पाने में सफल हो जाते हैं। व्यक्ति का संस्कार, उनका परिवेश, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं लोक-लाज और मर्यादाएं तय करता है कि वह किस दिशा की ओर अग्रसर होगा। व्यक्ति अपनी मर्यादा में जिएगा या मर्यादा का उल्लंघन कर देगा, यह उनका व्यक्तिगत प्रश्न होता है।

वासना का अर्थ सिर्फ स्त्री से संबंध अर्थात कामवासना ही नहीं है, बल्कि धन-दौलत, पद-प्रतिष्ठा पाने की अतिरिक्त इच्छा भी वासना ही कहलाती है। तृष्णा या लोभ-लालच की पूर्ति कभी संभव नहीं है। एक इच्छा की पूर्ति होते ही नई इच्छा पैदा होती है और इस नई इच्छा की पूर्ति के लिए व्यक्ति पुनः प्रयास करते हैं। इच्छाएं बार-बार जन्म लेती हैं, कभी मिटती नहीं है, क्योंकि इच्छाएं अनंत हैं। व्यक्ति के अंदर यदि संतोष भाव नहीं है, यदि वह सहजता से जीवन नहीं जी रहा है, सकारात्मक भाव से अपने कर्म और इच्छाओं में तालमेल नहीं बिठा पाता है, तो नकारात्मक भाव का सृजन उनके अंदर अवश्य ही होगा। यही नकारात्मकता व्यक्ति का दुस्साहस बनकर उभरता है जो उसे समभाव में कभी स्थिर नहीं होने देता है। कर्म के प्रति निष्ठा और कर्म फल के प्रति संतोष भाव या तृप्ति कभी वासना को बढ़ावा नहीं दे सकती है। व्यक्ति यदि स्वयं विचार करें तो आसानी से समझ सकता है कि जहां उनकी चेतना निरंतर वास करती है वही उसकी वासना है। हमारी चेतना इच्छाओं में वास करती है इसलिए विद्वतजन इच्छा को वासना कहते हैं। यही इच्छा जब अनियंत्रित होकर अतिरेक बन जाती है चाहे धन की इच्छा हो या काम की, पद की इच्छा हो या प्रतिष्ठा की, प्रेम की या नफरत की, ये सारी इच्छाएं ही वासना कहलाती हैं। शारीरिक इच्छाओं द्वारा उत्पन्न होने वाली भावना वासना ही है। नियंत्रित वासना हमारी चेतना को आध्यात्मिक वासनाओं में बदल सकती हैं और अनियंत्रित वासना हमें दुःख के सागर में भी डूबा देती है। हमें हमेशा ख्याल रखना चाहिए कि वासना की समाप्ति उपासना से ही संभव है और दूसरी बात यह भी कि वासना का खेल जानवर भी खेलते हैं। The end of lust is possible only through worship. Even animals play the game of lust. जिन्होंने उपरोक्त दोनों वाक्यों को समझ लिया, अपने जीवन में उतार लिया वह सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुंच सकता है अथवा निम्नतम कर्म में लिप्त होकर अपने जीवन को कलंकित कर लेता है। उम्र, यश, मान-सम्मान, धन, सुख, राजभोग की सीमाओं को तोड़कर प्रहलाद, ध्रुव, नचिकेता, सिद्धार्थ जैसे महान चरित्र और व्यक्तित्व का उदाहरण हमारे सामने है तो दूसरी ओर इसी वासना में फंसकर अपने जीवन को नारकीय बना देने वाले उदाहरण की भी ऐतिहासिक और वर्तमान सामाजिक जीवन में कोई कमी नहीं है।

भूख शरीर की रक्षा हेतु वास्तविक जरूरत है। कामवासना संतान उत्पत्ति एवं वंश वृद्धि के लिए आवश्यक है, यह प्राकृतिक है। इसमें कहीं कोई अतिशयोक्ति नहीं है। प्राचीन समाज इस जरूरत की समय अनुरूप व्यवस्था करता रहा है लेकिन भारतीय संस्कृति के साथ जब से इस्लामिक संस्कृति और पश्चिमी संस्कृति का घालमेल हुआ तो अपनी समाज व्यवस्था टूट कर बिखर गई। साम्यवादी विचारधारा के आगमन के बाद तो स्थिति और भी भयानक ही हो गई है। आजादी मिलते ही इन महत्वाकांक्षी राजनेताओं ने समाज व्यवस्था के साथ जो छेड़छाड़ शुरू किया, वह आज तक जारी है।

कार्यक्रम में मदन आर्य, मोहन गुप्ता, विपिन तिवारी, राजेश प्रजापति, नरेंद्र भाई, सुनील देव, बृजेश राय, पवन जी, राकेश कुमार सबने अपनी-अपनी समझ से बातें रखी हैं। विपिन तिवारी ने प्राकृतिक और अप्राकृतिक वासना के रूप में इसे बताया। आधुनिक संचार व्यवस्था के द्वारा जो कामवासना उत्तेजित करने वाले तत्व परोसे जाते हैं, उस पर भी ध्यान दिलाया। वासना किसी भी उम्र में होती है और नहीं भी हो सकती है ऐसा उन्होंने कहा। मोहन गुप्ता जी ने सृजन का रहस्य और मधुर मीठे संबंधों के बीच कामवासना को आवश्यक बताया। सरकारी हस्तक्षेप के द्वारा इस भूख पर नियंत्रण का प्रयास गलत है। ऐसा उनका मत है। नरेंद्र भाई ने आवश्यकता की अतिरेक को वासना कहा। अनाधिकृत हस्तक्षेप या अनाधिकार संपत्ति की चाहत, अतिरेक शारीरिक एवं सामाजिक संबंधों की लालसा, घनिष्ठ आकर्षण, शक्ति संग्रह, राजनेताओं की महत्वाकांक्षा यह सब वासना ही तो है। सुनील देव जी ने वासना के बढ़ते नकारात्मक प्रभाव पर अपना मत रखते हुए कई तत्वों को शामिल किया। नया को-एजुकेशन, इंद्रिय-निग्रह की कमी, शिक्षा पद्धति का दोष, पुरातन कालीन व्यवस्था का अभाव और शारीरिक संरचनाओं में परिवर्तन यह सब वासना के मूल वजह है। राजेश प्रजापति जी ने विषयों की वासना पर अपनी राय दी। उनका मत है कि हम इंद्रिय निग्रह के द्वारा कामवासना एवं विषय वासना पर नियंत्रण कर सकते हैं। पवन जय जी ने शारीरिक दुर्घटना से ज्यादा इसे मानसिक रोग मान लिया है। बाजारीकरण एक महत्वपूर्ण कारक है, जिसका उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि कंडोम बेचने वाला करोड़पति व्यक्ति बन जाता है और उसका उपयोग करने वाला अपना अस्तित्व तक मिटा लेता है। सभी साथियों के विचार रखने के बाद मुनि जी ने सार रूप में बताया कि आज सिर्फ स्त्री वेश्यालय ही नहीं पुरुष वेश्यालय भी खुलने लगे हैं। वासना का संबंध व्यक्ति के अंतिम प्रहर तक चलते रहता है। सामाजिक व्यवस्था, व्यक्ति के संस्कार, विवेक, लोकलाज की भावना वासनाओं को नियंत्रित करती है। सरकार बढ़ावा देती है बैरियर लगाकर सामाजिक पारिवारिक व्यवस्था को यह राजनीतिक व्यवस्था हस्तक्षेप करके कमजोर करती है। जिसका परिणाम है कि आज छोटी-छोटी बच्चियां भी सुरक्षित नहीं है। मांग और पूर्ति का संबंध प्राकृतिक होता है। आवश्यकता बढ़ गई और मांग घट गई तो निश्चित है कि समाज में असंतुलन पैदा होगा। महिला सशक्तिकरण के कारण भी असंतुलन पैदा किया गया है। दोनों के बीच दूरी बढ़ाई गई है। घर में भी अधिकारों को लेकर आपसी कलह बढ़ता जा रहा है। टूटता परिवार काम इच्छा की पूर्ति के लिए सामाजिक दुराचार को अपना मददगार और सहायक मानता है। यही कारण है कि व्यक्ति की तृष्णा बढ़ती जाती है और एक अतृप्त व्यक्ति अपनी सोचने-समझने की शक्ति गंवा देता है। परिणामस्वरुप सारी मर्यादाएं टूट जाती हैं। पारिवारिक-सामाजिक मान्यताएं, जाति, धर्म और समाज व्यवस्था की सारी सीमाएं लांघकर व्यक्ति वासना के गर्त में फंसते चले जाते हैं।

संजय तांती

पत्र व्यवहार का पता
बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बाक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492021
website : margdarshak.info

प्रकाशक, संपादक व स्वामी - बजरंगलाल
9617079344
mail : Support@margdarshak.info